Postal Reg. No. : XXXXXXXXX

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 1

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 19

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

14 जुलाई 2016 ई

8 शव्वाल 1437 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा तआला की वाणी एक शक्तिशाली प्रभाव अपने अंदर रखती है और एक इस्पात के कील की तरह दिल में धंस जाती है और दिल में एक शुद्ध प्रभाव करती है और दिल को अपनी ओर आकर्षित करती है और जिस पर नाज़िल होती है उसे बहादुर कर देती है।

उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

याद रहे कि ख़ुदा की बातचीत एक विशेष बरकत और शौकत और रमणीयता अपने अंदर रखता हैं। और चूंकि ख़ुदा सुनने वाला,जानने वाला व रहीम है इसलिए वह अपने मुत्तकी और नेक तथा वफादार बन्दों को उनके प्रस्तुत की गई बातों का जवाब देता है और यह सवाल तथा जवाब कई घंटे तक लम्बे हो सकते हैं जब बंदा विनय के रंग में एक सवाल करता है तो उसके बाद कुछ मिनट तक इस पर एक रबोदगी छा कर इस नियम अनुसार पर्दे में उसे जवाब मिल जाता है। फिर उसके बाद बन्दा अगर कोई सवाल करता है तो देखते देखते उस पर एक और रबोदगी छा जाती है और बदस्तूर इसके पर्दे में जवाब पाता है। और भगवान ऐसा करीम और रहीम और दयालु है कि अगर हज़ार बार भी एक बन्दा कुछ सवाल करे तो जवाब मिल जाता है। मगर चूंकि अल्लाह तआला बेनियाज़ भी है और ज्ञान और हिकमत की भी रखता है इसलिए कुछ सवालों के जवाब में प्रकट करना आवश्यक नहीं होता और अगर यह पूछा जाए कि कैसे ज्ञात हो कि वह उत्तर ख़ुदा तआला की तरफ से हैं न शैतान की तरफ से। इस का जवाब हम अभी दे चुके हैं।

इस के अतिरिक्त शैतान गूंगा है अपनी भाषा में स्पष्टता और निरन्तरता नहीं रखता और गूंगे की तरह वह परिष्कृत और बहु अधिक बातों में सक्षम नहीं हो सकता केवल एक बदबू दार रूप में वाक्य या वाक्यांश दिल में डाल देता है। इस को अनादि काल से यह तौफ़ीक़ ही नहीं दी गई कि स्वादिष्ट और प्रताप युक्त वाणी कर सके और या कुछ घंटे तक सिलसिला वाणी का सवालों के जवाब देने में जारी रख सके। और वह बहरा भी है। प्रत्येक सवाल का जवाब नहीं दे सकता। और वह असमर्थ भी है अपने इलहामों में कोई शक्ति और उन्नत स्तर की भविष्य की बात कहने का नमूना दिखला नहीं सकता। * और उसका गला भी बैठा हुआ है प्रताप और ज़ोर से बोल नहीं सकता। नपुंसकों की तरह उस की आवाज़ धीमी है उन्हीं लक्षणों से शैतानी वह्यी की पहचान कर लोगे। लेकिन अल्लाह तआला गूंगे और बहरे और असमर्थ की तरह नहीं वह सुनता है और बराबर जवाब देता है और उसकी वाणी में प्रताप और शौकत और ज़ोरदार आवाज़ होती है और वाणी आनन्द दायक और लज़ीज़ होती है और शैतान की वाणी मंद और स्त्रियों जैसी और संदिग्ध रूप में होती है उसमें भय और प्रताप और ऊंचाई नहीं होती और न वह बहुत देर तक चल सकती है मानो जल्दी थक जाता है और इसमें भी कमज़ोरी और कायरता टपकती है। परन्तु ख़ुदा की वाणी थकने वाली नहीं होती और हर एक प्रकार की शक्ति अपने अंदर रखती है और बड़े भविष्य के मामलों और सामर्थ वाले वादों पर आधारित होती है और ख़ुदा की महिमा और प्रताप और शक्ति और पवित्रता की उस से गंध आती है। और शैतान की वाणी में यह विशेषता नहीं होती। और साथ ही ख़ुदा तआला की वाणी एक शक्तिशाली प्रभाव अपने अंदर रखती है और एक इस्पात की कील की तरह दिल में धंस जाती है और दिल में एक शुद्ध प्रभाव करती है और दिल को अपनी ओर आकर्षित करती है और जिस पर नाज़िल होती है उसे बहादुर कर देती है। यहां तक कि अगर उस को तेज़ तलवार के साथ टुकड़ा टुकड़ा कर दिया जाए या लटका दिया जाए या प्रत्येक प्रकार का दुःख जो दुनिया में संभव है पहुंचाया जाए और प्रत्येक प्रकार की निर्लज्जता और अपमान किया जाए या जलाने वाली आग में बिठाया जाए या जलाया जाए वह कभी नहीं कहेगा कि यह ख़ुदा की वाणी नहीं जो मेरे पर अवतरित होता है क्योंकि ख़ुदा उसे पूर्ण विश्वास प्रदान कर देता है और अपने चेहरे का आशिक़ कर देता है और जान और सम्मान और मल के उस के निकट ऐसा होता है जैसा कि एक तिनका। वह ख़ुदा का दामन नहीं छोड़ता हालांकि सारी दुनिया उसे अपने पैरों के नीचे कुचल डाले और धैर्य और साहस और दृढ़ता में अनुपमीय होता है मगर शैतान से इल्हाम पाने वाले यह शक्ति नहीं पाते वह कायर होते हैं क्योंकि शैतान कायर है।

* यह सवाल कि क्या शैतानी सपना या इल्हाम में कोई भविष्य की ख़बर हो सकती है या नहीं। इसका जवाब यह है कि शैतानी ख़वाब या इल्हाम में जैसा कि कुरान शरीफ से प्रकट होता है कभी भविष्य की ख़बर तो हो सकती है, लेकिन वह तीन लक्षण अपने साथ रखती है (1) प्रथम यह कि वह ग़ैब कोई समर्थ वाला ग़ैब नहीं होता जैसा कि ख़ुदा तआला की वाणी में इस प्रकार के ग़ैब होते हैं कि अमुक व्यक्ति जो दुष्टता से बाज नहीं आता हम उसे हलाक कर देंगे। और अमुक व्यक्ति जिसने सच्चाई दिखलाई हम इसे ऐसा ऐसा सम्मान देंगे और हम अपने नबी के समर्थन के लिए अमुक अमुक निशान दिखलाएँगे और उनका कोई मुकाबला नहीं कर सकेगा और हम इंकार करने वालों पर अमुक प्रकोप प्रकट करेंगे और मोमिनों को इस तरह की विजय और समर्थन देंगे। यह समर्थ वाले ग़ैब हैं जो हुकूमत की शक्ति अपने अंदर रखते हैं। ऐसी भविष्यवाणियां शैतान नहीं कर सकता। (2) दूसरे शैतानी ख़ावाब या इल्हाम कंजूस की तरह होता है इस में अधिकतर ग़ैब नहीं होता और रहमानी इलहाम पाने वाले के मुकाबले पर इस का ग़ैब इतना कम होता है जैसा कि समुद्र के मुकाबले में एक बूंद। (3) तीसरे प्राय उस पर झूठ प्रबल होता है। मगर रहमानी ख़वाब या इल्हाम पर सच प्रबल होता है अर्थात अगर सारे इलहामों को देखा जाए तो रहमानी इल्हामों में अधिकतर सच की होती है और शैतानी में इसके विपरीत। और हम ने सम्पूर्ण का शब्द रहमानी ख़वाबों या इलहामों के बारे में इस लिए नहीं किया कि उनमें भी कुछ इल्हाम या ख़वाब मुतशाबेहात के रंग में होते हैं या इज्तेहाद में कोई ग़लती हो जाती है और अज्ञानी मूर्ख ऐसी पेशगोईयों को झूठ समझ लेते हैं और उनका अस्तित्व मात्र परीक्षा के लिए होता है। और कुछ रब्बानी पेशगोईयां चेतावनी की किस्म में से होती हैं जिनकी देरी वैध होता है। और साथ ही याद रहे कि शैतान का इल्हाम अनैतिक और अपवित्र आदमी से अनुकूलता रखता है। मगर रहमानी इल्हाम की बहुतायत सिर्फ उन्हें होती है जो शुद्ध मन के होते और ख़ुदा तआला के प्रेम में लीन हो जाते हैं। इसी में से।

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन,भाग 22, पृष्ठ 142 -144)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सम्पादकीय

सन्तान की तरबियत के तरीके

हज़रत मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो (भाग-1)

अहमदिया जमाअत के दूसरे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने जलसा सालाना कादियान 1925 ई के अवसर पर जो तक़रीर फरमाई थी वह बाद में "मिनहाजुत्तालेबीन" के नाम से प्रकाशित हुई थी। इस तक़रीर में आप ने बच्चो की उचित तरबियत के तरीके वर्णन फरमाए हैं। आप फरमाते हैं कि

"बच्चे के प्रशिक्षण का ज़माना रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह करार दिया है जबकि बच्चा अभी पैदा ही हुआ है। मुझे लगता है अगर हो सकता तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते कि जब बच्चा गर्भ में हो तभी से उसकी प्रशिक्षण का समय शुरू हो जाना चाहिए। मगर चूंकि यह हो नहीं सकता था इसलिए जन्म के समय से प्रशिक्षण करार दिया और वह इस तरह कि कह दिया कि जब बच्चा पैदा हो उसी समय उस के कान में अज़ान कही जाए। अज़ान के शब्दों टोने या जादू के रूप में बच्चे के कान में नहीं डाले जाते। बल्कि इस समय बच्चे के कान में अज़ान देने का आदेश देने से माता-पिता को यह बात समझाना चाहता है कि बच्चा के प्रशिक्षण का समय अब शुरू हो गया है।

अज़ान के अतिरिक्त भी रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बच्चों को बचपन से ही शिष्टाचार सिखाने का आदेश दिया है। और अपने प्रियजनों को भी बचपन में शिष्टाचार सिखा कर व्यावहारिक सबूत दिया है। हदीसों में आता है, इमाम हसन जब छोटे थे तो एक दिन खाते समय आप ने उन्हें फरमाया " कुल बेयमीनक वकुल मिम्मा यलीक।" कि दाहिने हाथ से खाओ और अपने आगे से खाओ। हज़रत इमाम हसन की उम्र उस समय अढ़ाई साल के करीब होगी। हमारे देश में अगर बच्चा सारे खाने में हाथ डालता और सारा मुंह भर लेता है बल्कि आसपास बैठने वालों के कपड़े भी ख़राब करता है तो माता-पिता बैठे हँसते हैं और कुछ परवाह नहीं करते। या यूं ही मामूली सी बात कह देते हैं। जिससे उनका उद्देश्य बच्चे को समझाना नहीं बल्कि दूसरों को दिखाना होता है। हदीस में एक और घटना भी आती है कि एक बार बचपन में इमाम हसन ने दान की ख़ूजूरों में से एक खजूर मुंह में डाल ली तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके मुंह में उंगली डाल कर निकाल ली। जिसका मतलब यह था कि तुम्हारा काम ख़ुद काम करके खाना है। न कि दूसरों के लिए बोझ हो।

अत: बचपन का प्रशिक्षण ही होता है जो मनुष्य को वह कुछ बनाती है जो आगामी जीवन में वह बनता है। तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: मा मिन मौलूद इल्ला यूलद अलल् फितरते फ़ अबूहो यहूदिय्यन अऔ यनसरानिय्यहू अऔ बेमजूसिय्येही" (बुखारी व मुस्लिम) कि बच्चा प्रकृति पर पैदा होता है। आगे माँ बाप उसे यहूदी या ईसाई या मजूसी बनाते हैं। इसी तरह यह भी सच है कि माता-पिता ही उसे मुसलमान या हिंदू बनाते हैं। इस हदीस का यह मतलब नहीं कि जब बच्चा वयस्क हो जाता है तो माँ बाप उसे गिरजा में ले जा कर ईसाई बनाते हैं। बल्कि यह है कि बच्चे माता पिता के कार्यों की नकल करके और उनकी बातें सुनकर वही बनता है जो उसके माँ बाप होते हैं। बात यह है कि बच्चे में नकल की आदत होती है। अगर माता-पिता उसे अच्छी बातें नहीं सिखाएंगे तो वह दूसरों के कार्यों की नकल करेगा। कुछ लोग कहते हैं बच्चों को मुक्त छोड़ देना चाहिए खुद बड़े होकर अहमदी हो जाएंगे। मैं कहता हूँ अगर बच्चे के कान में किसी और की आवाज़ नहीं पड़ती तब तो हो सकता है कि जब वह बड़ा होकर अहमदियत संबंधित सुने तो अहमदी हो लेकिन जब और आवाज़ उसके कान में अभी भी पड़ रही हैं और बच्चा साथ साथ सीख रहा है तो वह वही बनेगा जो देखेगा और सुनेगा। अगर फरिशते उसे अपनी बात नहीं सुनाएंगे तो शैतान उसका साथी बन जाएगा। अगर नेक बातें उसके कान में न पड़ेंगी तो बुरी पड़ेंगी और वह दुष्ट हो जाएगा।

तो अगर आप लोग गुनाह का सिलसिला रोकना चाहते हैं जिस तरह सगरेशन कैंप होता है इस तरह बनाओ और आगामी संतान से गुनाह की बीमारी दूर कर दो ताकि आगामी पीढ़ियां सुरक्षित रहें।

तरबियत के तरीके

अब मैं प्रशिक्षण के तरीके बताता हूँ:

(1) बच्चा पैदा होने पर सब से पहले प्रशिक्षण अज़ान है। जिसके बारे पहले बता चुका हूँ।

(2) यह कि बच्चे को साफ रखा जाए। मूत्र मल तुरंत साफ कर दिया जाए। शायद कुछ लोग यह कहें यह काम तो महिलाओं का है। यह सही है मगर पहले पुरुषों में यह विचार पैदा होगा तो महिलाओं में होगा। इसलिए पुरुषों का काम है कि महिलाओं को ये बातें समझाएं कि जो बच्चा साफ न रहे उसमें साफ विचार कहां से आएंगे। मगर देखा गया है इसकी कोई परवाह नहीं की जाती। मज्लिस में अगर बच्चे को दस्त आए तो कपड़े पर फिरा कर औरतें कपड़ा बगल में दबा लेती हैं। और कादियान के आसपास की ग्रामीण महिलाओं को तो देखा है, जूती में मल करके इधर उधर फेंक देती हैं। जब बच्चे की बाहरी सफाई का ध्यान नहीं रखा जाता तो भीतरी सफाई कैसे होगी? लेकिन अगर बच्चा दिखाने में साफ हो तो उसका असर उसके भीतर पर भी होगा और उसका भीतर भी शुद्ध होगा। क्योंकि गंदगी की वजह से जो गुनाह पैदा होते हैं उन से बचा रहेगा। यह बात चिकित्सा की दृष्टि से साबित हो गई है कि बच्चे में गुनाह गंदगी के कारण उत्पन्न होता है। जब बच्चे की योनि साफ न हो तो बच्चा उसे खुजलाता है। इससे वह मज़ा महसूस करता और इस तरह उसे काम शक्ति का एहसास हो जाता है। अगर बच्चे को साफ रखा जाए और जैसे-जैसे वह बड़ा हो उसे बताया जाए कि इन स्थानों को सफाई के लिए धोने के लिए आवश्यक होता है, तो वह नफसानी बुराइयों से काफी सुरक्षित रह सकता है। यह प्रशिक्षण भी पहले दिन से शुरू होना चाहिए।

(शेष.....)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

जामिया अहमदिया में प्रवेश

वाकफ़ीन नौ की पहली प्राथमिकता

उपदेश हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफ़ीन नौ की कक्षा में नसीहत करते हुए फरमाया

" वक्फे नौ का टाइटल लगा कर साफ्टवेयर इंजीनियरिंग कम्प्यूटर साईंस में जाने के स्थान पर पहली प्राथमिकता जामिया में जाने की होनी चाहिए। इस के बाद डाक्टर इंजीनियर या किसी दूसरी फील्ड में जाने का सोचें।"

(दैनिक अल्फज़ल रब्वा 10 जूलाई 2013 ई)

इसी प्रकार फरमाया कि

"होश की आयु में आकर जब वाकफ़ीन बच्चे जमाअत के प्रोग्रामों में हिस्सा लें तो उन के दिमाग़ों में यह बात दृढ़ हो कि उन्होंने सिर्फ और सिर्फ धर्म की सेवा के लिए अपने आपको प्रस्तुत करना है। अधिक से अधिक बच्चों के दिमाग़ में यह डालें कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य धर्म की शिक्षा प्राप्त करना है। ये जो वाकफ़ीन नौ बच्चे हैं इन के दिमाग़ों में यह डालने की आवश्यकता है कि धर्म का शिक्षा के लिए जो जमाअत के धार्मिक संस्थाएं हैं उस में जाना आवश्यक है। जामिआ अहमदिया में जाने वालों के संख्या वाकफ़ीन नौ में बहुत अधिक होनी चाहिए।

(ख़ुत्बा जुम्अ 18 जनवरी 2013 ई)

इसी प्रकार फरमाया कि

"हमारे सामने तो दुनिया के क्षेत्र हैं। एशिया,अफ्रीका, यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया, द्वीपों में प्रत्येक स्थान पर हम ने जाना है। संसार के प्रत्येक इंसान तक इस्लाम के सुन्दर संदेश को पुहंचाना है इसके लिए कुछ एक मुबल्लेग़ीन तो काम को पूरा नहीं कर सकते। (ख़ुत्बा जुम्अ 18 जनवरी 2013 ई)

इसी प्रकार फरमाया कि

" माता पिता के लिए भी और वाकफ़ीन नौ के लिए भी ज़रूरी है कि अपनी ज़िम्मेदारी निभाऐं। मैं पुन: इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि दुनिया में धर्म के फैलाने के लिए धार्मिक ज्ञान के आवश्यकता है। और यह ज्ञान सब से अधिक ऐसी संस्था से मिल सकता है जिस का उद्देश्य ही धर्म सिखाना हो और यह संस्था जमाअत में जामिया अहमदिया के नाम से जानी जाती है।"

(ख़ुत्बा जुम्अ 18 जनवरी 2013 ई)

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

रोज़ों के फर्ज़ होने का इसलिए महत्त्व नहीं है कि इस्लाम से पहले धर्मों में भी रोज़े निर्धारित किए गए थे बल्कि महत्त्व इस बात की है कि ताकि तुम तक्वा धारण करो कि तुम बुराइयों से बच जाओ।

रोज़ों का मूल उद्देश्य यह है कि तुम तक्वा में तरक्की करो। एक महीना प्रशिक्षण का प्रदान किया गया है इस में अपने तक्वा के स्तर को बढ़ाओ। यह तक़वा तुम्हारी नेकियों की गुणवत्ता भी बढ़ा देगा। यह तुम्हें स्थायी नेकियों पर स्थापित भी करेगा और अल्लाह तआला की नज़दीकी भी दिलाएगा और इसी तरह पिछले गुनाह भी माफ होंगे।

आज जहां धर्म के नाम पर तथाकथित उलमा मुसलमानों से ऐसे काम करवा रहे हैं जो अल्लाह तआला की इच्छा के सरासर विरुद्ध हैं और तक्वा से दूर हैं वहाँ अहमदी भाग्यशाली हैं कि उन्हें समय के इमाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को स्वीकार करने की ताकत मिली जिन्होंने हमें इस्लाम की शिक्षा की प्रत्येक बारीकी से अवगत किया है। तक्वा क्या है और तक्वा प्राप्त किन बातों से होता है और अपनी जमाअत के लोगों से इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या उम्मीद रखते हैं इन बातों को जानने और समझने के लिए मैंने आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण लिए हैं जो इस समय में आपके सामने रखना चाहता हूँ। ये वे मार्ग दर्शक बातें हैं जो हमें ईमान में बढ़ाते हुए हमें तक्वा पर स्थापित करती हैं और जिस प्रशिक्षण के महीने से हम तक्वा प्राप्त करने के लिए गुज़र रहे हैं उनके लिए रणनीति यह भी तय करती हैं।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तक्वा के विषय पर विभिन्न उद्धरण और उपदेश और इन के हवाले से जमाअत के लोगों को नसीहतें।

आदरणीया ताहिरा हमीद साहिबा पत्नी आदरणीय अब्दुल हमीद साहिब मरहूम कवानटरी यू.के की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और आदरणीय हमीद अहमद साहिब शहीद पुत्र आदरणीय शरीफ अहमद साहिब ज़िला अटक की शहादत पर इन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 10 जून 2016 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ (सूरह अल्बकरह 184)

हे वे लोगो ! जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी तरह अनिवार्य कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर अनिवार्य किए गए थे ताकि तुम तक्वा धारण करो।

इस आयत में अल्लाह तआला ने एक ऐसी बात की ओर ध्यान दिलाया है जो हमारी दुनिया और परलोक संवारने वाली है और वह बात है फरमाया। لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ अत: रोज़ों के फर्ज़ होने का इसलिए महत्त्व नहीं है कि इस्लाम से पहले धर्मों में भी रोज़े निर्धारित किए गए थे बल्कि महत्त्व इस बात का है कि ताकि तुम तक्वा धारण करो कि तुम बुराइयों से बच जाओ।

रोज़ा क्या है यह ख़ुदा तआला की ख़ुशी के लिए एक महीने अपने आप को उन वैध बातों से भी रोकना है जिनकी सामान्य परिस्थितियों में अनुमति है। इसलिए जब इस महीने में आदमी अल्लाह तआला की इच्छा के लिए वैध बातों से रुकने की कोशिश करता है तो फिर यह तो नहीं हो सकता कि अवैध बातों और बुराइयों को एक इंसान करे। अगर कोई इस रूह को सामने रखते हुए रोज़े नहीं रखता कि मैंने यह दिन अल्लाह तआला की इच्छा को प्राथमिकता देते हुए गुज़ारने हैं और हर उस बात से बचना है जिससे बचने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है और हर उस बात को करना है जिस के करने के लिए अल्लाह तआला ने आदेश दिया है तो अगर यह भावना हमारे ध्यान में नहीं, प्रत्येक समय सामने नहीं और उस पर अनुकरण करने की कोशिश नहीं तो ये रोज़े व्यर्थ हैं। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, ख़ुदा तआला को तुम्हें भूखा रखने की कोई ज़रूरत नहीं है।

(बुख़ारी किताबुस्सौम हदीस 1903)

रोज़ों का मूल उद्देश्य यह है कि तुम तक्वा में तरक्की करो। एक महीना प्रशिक्षण का प्रदान किया गया है इस में अपने तक्वा के स्तर को बढ़ाओ। यह तक़वा तुम्हारी नेकियों की गुणवत्ता भी बढ़ा देगा। यह तुम्हें स्थायी नेकियों पर स्थापित भी करेगा और अल्लाह तआला की नज़दीकी भी दिलाएगा और इसी तरह पिछले गुनाह भी माफ होंगे।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि जिस व्यक्ति ने रमज़ान के रोज़े ईमान की स्थिति में रखे और अपने नफ्स का आत्म निरीक्षण करते हुए रखे उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाएंगे।

अत: जब पिछले गुनाह माफ हो जाएं और फिर तक्वा को धारण कर के आदमी उस पर स्थापित हो जाए तो ऐसा मनुष्य वास्तव में रमज़ान में से गुज़रने के उद्देश्य में सफल हो गया बल्कि उसने अपने जीवन का लक्ष्य पा लिया।

तक्वा के लाभ जो हमें पवित्र कुरआन में मिलते हैं उसमें एक लाभ अल्लाह तआला ने ख़ुदा यह उल्लेख किया है कि فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (सूरह अल्माइदा : 101)अत: हे बुद्धिमानों अल्लाह तआला का तक्वा धारण करो ताकि तुम सफल हो जाओ लक्ष्य को पाओ। अत: कौन है जो सफलता प्राप्त नहीं करना चाहता। दुनिया की उपलब्धियां तो यहीं रह जानी है वास्तविक सफलता तो वह है जो इस दुनिया की भी सफलता है और अगली दुनिया की भी सफलता है और वह अल्लाह तआला ने फरमाया कि अगर तुम्हारे में बुद्धि है तो सुन लो कि वह तक्वा पर स्थापित होने से ही सफलता मिलेगी। आज जहां धर्म के नाम पर तथाकथित उलमा मुसलमानों से ऐसे काम करवा रहे हैं जो अल्लाह तआला की इच्छा के सरासर विरुद्ध हैं और तक्वा से दूर हैं वहाँ अहमदी भाग्यशाली हैं कि उन्हें समय के इमाम और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ को स्वीकार करने की ताकत मिली जिन्होंने हमें इस्लाम की शिक्षा की प्रत्येक बारीकी से अवगत किया है।

तक्वा क्या है? और तक्वा प्राप्त किन बातों से होता है और अपनी जमाअत के लोगों से इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क्या उम्मीद रखते हैं? इन बातों को जानने और समझने के लिए मैंने आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उद्धरण लिए हैं जो इस समय में आपके सामने रखना चाहता हूँ। ये वे मार्ग दर्शक बातें हैं जो हमें ईमान में बढ़ाते हुए तक्वा पर स्थापित करती हैं और जिस प्रशिक्षण के महीने से हम तक्वा प्राप्त करने के लिए गुज़र कर रहे हैं उनके लिए रणनीति यह भी तय करती हैं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"तक्वा कोई छोटी चीज़ नहीं है इस के माध्यम से उन सभी शैतानों का सामना करना होता है, जो मनुष्य के प्रत्येक आंतरिक ताकत और शक्ति पर हावी पाए हुए हैं। यह सभी शक्तियां नफ्स अम्मारह की हालत में इंसान के अंदर शैतान हैं।" (अर्थात बुराई की ओर ले जानी वाली जो शक्तियां हैं या जो बुराई की ओर जाने के लिए और नेकियों से रोकने के लिए जो विचार आदमी के अंदर आते हैं यह आदमी के अंदर का शैतान है।) फरमाया कि "अगर ये सुधार न पाएंगी तो" (इन शक्तियों को जो तुम्हारे अंदर नफ्स अम्मारह के रूप में हैं जो शैतान के रूप में अगर इनका सुधार नहीं करोगे या ये शक्तियां सुधार नहीं पातीं तो फिर क्या परिणाम होगा कि) "मनुष्य को ग़ुलाम कर लेंगी।" फरमाया कि "ज्ञान और बुद्धि ही बुरे रूप में इस्तेमाल हो कर शैतान बन जाते हैं।" (ज्ञान है, बड़ी अच्छी बात है। आदमी की बुद्धि है, आदमी बुद्धिमान हो तो बड़े बड़े काम करता है लेकिन अगर यह ज्ञान और मनुष्य की बुद्धि जिस पर मनुष्य गर्व करने लग जाए उन्हें ग़लत कामों के लिए इस्तेमाल करने लग जाए या उन को नेकियों के मुकाबला पर खड़ा कर दे तो यह शैतान हो जाती हैं।) फरमाया कि मुत्तकी का काम उनकी और ऐसा ही और अन्य सारी शक्तियों का ठीक रूप से इस्तेमाल करना है।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 33 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

मुत्तकी कौन है? इसका ऐसे मौके पर किया काम है। यह चीज़ें जो हैं, ज्ञान है बुद्धि है या दूसरी चीज़ें इंसान को अल्लाह तआला ने दी हुई हैं, शक्तियां दी हुई हैं उन्हें उचित अवसर पर प्रयोग करना यह मुत्तकी का मूल काम है। वरना अगर उचित मौके पर उपयोग नहीं हो रहीं तो यही बातें मनुष्य को नुकसान पहुंचा देती हैं अल्लाह तआला से दूर ले जाती हैं, शैतान के पास कर देती हैं।

फिर आप एक जगह फरमाते हैं कि "तक्वा का विषय बहुत सूक्ष्म है इसे प्राप्त करो। ख़ुदा की महिमा दिल में बिठाओ। जिसके कार्यों में कुछ भी दिखावा हो ख़ुदा उस के कर्म को वापस उल्टा उसके मुंह पर मारता है।" (किसी भी कर्म में दिखावा न हो। दिखावा बनावट न हो अगर यह है तो वह कर्म अल्लाह तआला के लिए नहीं चाहे वह इबादत है चाहे कुरआन करीम की तिलावत है चाहे रोज़ा रखना है या कोई और नेकी का काम है।) फरमाया "मुत्तकी होना मुश्किल है। जैसे अगर कोई तुम्हें कहे कि तूने कलम चुराया है तो तू क्यों ग़ुस्सा करता है।" (कोई अगर तुम्हें कहे मेरा कलम यहाँ पड़ा हुआ था तुम ने उसे चुराया है उठा लिया है, तुम उस समय क्रोध में आ जाते हो। क्यों ?) "तेरा परहेज़ तो केवल ख़ुदा के लिए है।" (अगर नेकी है, अगर तक्वा है तो फिर इस क्रोध से बचना तो ख़ुदा के लिए होना चाहिए। ज़रा सी बात पर अपने अहंकार को सामने न लाओ बल्कि अपने कर्म को ख़ुदा की ख़ुशी की इच्छा के अनुसार ढाल लो।) फरमाया कि "यह क्रोध क्यों आया इसलिए के सच्चाई पर न थे।" (यह ग़ुस्सा क्यों आया? इसलिए कि तुम्हारा उद्देश्य ख़ुदा की ख़ुशी नहीं था बल्कि तुम अपने अंहकार की ओर चल रहे थे।) "जब तक वास्तविक रूप में मनुष्य पर बहुत सी मौतें न आ जाएं वह मुत्तकी नहीं बनता।" फरमाया कि "चमत्कार और इलहाम भी तक्वा की शाख हैं वास्तविकता तक्वा है।" (कोई कह दे मुझे इलहाम होते हैं या चमत्कार दिखाता हूँ। यह तो यह तक्वा के कारण से एक अन्तर्गत चीज़ें हैं असली बात तक्वा है।) "इसलिए तुम इलहामों और रउया के पीछे न पड़ो बल्कि तक्वा के धारण करने के पीछे लगो। जो मुत्तकी है उस के इलहाम भी सही हैं और अगर तक्वा नहीं है तो इलहाम भी विश्वसनीय नहीं। उनमें शैतान का हिस्सा हो सकता है। किसी के तक्वा को उसके इल्हाम वाला होने से न पहचानो।" (यह न समझो कि वह बड़ा मुत्तकी है उसे बड़ी ख़ुवाबें आती हैं बड़ा नेक है। इलहाम होते हैं। कशफ होते हैं। बल्कि इसके इलहामों को उसकी तक़वा की हालत से परीक्षण करो। अगर उस को जांचना है कि वह इलहाम या ख़ुवाबें सही हैं तो यह देखो कि उसमें तक्वा भी है कि नहीं। कुछ छोटी-छोटी बातें होती हैं जैसे यह उदाहरण दिया कि किसी ने कहा कि तुम ने मेरी अमुक चीज़ उठा ली तो उसे ग़ुस्सा आ गया। इस आवेग में आना, क्रोध में आना अपने अधिकार के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाना यह बातें तक्वा नही हैं और अगर ये चीज़ें नहीं हैं और फिर लाख कोई कहता रहे बड़ी सच्ची ख़ुवाबें देखता हूँ मुझे बड़े कश्फ होते हैं वे सब ग़लत हैं।) फरमाया कि "इलहाम पाने वाला होने से न पहचानो बल्कि उसके इलहाम को उसकी तक्वा की हालत से परीक्षण और मूल्यांकन करो। सब तरफ से आँखें बंद करके पहले तक्वा के स्तरों को तय करो। नबियों के नमूने को स्थापित करो। जितने नबी आए सबका उद्देश्य यही था कि तक्वा की राह सिखलाएँ। اِنۡ اَوۡلِيَآؤُهٗۤ اِلَّا الۡمُتَّقُوۡنَ (सूरह अन्फाल 35) मगर कुरआन शरीफ में तक्वा की बारीक राहों को सिखलाया गया है। नबी का कमाल उम्मत के कमाल को चाहता है।" फरमाया "चूंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्नबिय्यीन थे इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत के कमाल खत्म हुए। नबुव्वत के कमाल ख़त्म होने के साथ ही ख़त्म नबुव्वत हुआ। जो अल्लाह तआला को राज़ी करना चाहे और चमत्कार देखना चाहे और आदत से हट कर देखना चाहे तो उसे चाहिए कि वह अपने जीवन को भी आदत से हट कर बना ले।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 301-302 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: यह परिवर्तन हमें लाने की ज़रूरत है। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मानने वाले हैं, आप की उम्मत में से हैं तो आपका उच्च आदर्श हमारे लिए है और इसके लिए यही है कि अल्लाह तआला से संबंध बढ़े और वास्तविक तक्वा पैदा हो।

फिर इस बात की ओर भी वर्णन करते हुए कि प्रत्येक नेकी की जड़ तक्वा है फरमाया कि

"तक्वा धारण करो। तक्वा प्रत्येक चीज़ की जड़ है। तक्वा के अर्थ हैं प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म गुनाह से बचना। तक्वा इस को कहते हैं कि जिस बात में बुराई का संदेह हो उस से दूरी की जाए।" (यह नहीं कि बाहरी बुराई प्रकट हो रही है बल्कि अगर कोई शक भी है कि इसमें कोई बुराई हो सकती है इससे बचो।)" फरमाया दिल का उदाहरण एक बड़ी नहर जैसी है जिसमें से और छोटी नहरें निकलती हैं जिन को सूवा या राजबाहा कहते हैं।" (पंजाब में भारत में पाकिस्तान में छोटी नहरें जो हैं उन्हें स्थानीय भाषा में सूवा या राजबाहा कहते हैं।) फरमाया कि "दिल की नहर में भी छोटी-छोटी धाराएं निकलती हैं जैसे ज़बान आदि।" (ज़बान है, या जो दूसरे सारे काम हैं जिन का दिल के ऊपर प्रभाव होता है) फरमाया कि "दिल की नहर में भी छोटी-छोटी धाराएं निकलती हैं जैसे ज़बान आदि अगर छोटी नहर या सूवा का पानी ख़राब और गंदा और मैला हो तो सोचा जाता है कि बड़ी नहर का पानी भी ख़राब है। तो अगर किसी को देखो कि उसकी ज़बान या हाथ व पैर आदि में से कोई अंग अशुद्ध है तो समझो कि उसका दिल भी ऐसा ही है।

(मल्फूज़ात भाग 2 पृष्ठ 321 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अगर किसी की ज़बान गंदी है, रोज़े रखने के बावजूद झगड़ों और गाली गलौच से रुकता नहीं या उसके हाथों से ग़लत काम हो रहे हैं तो समझ लो कि उसका दिल भी साफ नहीं है और यह तक्वा से दूर है।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि अपना जीवन ग़रीबी और दरिद्रता में व्यतीत करना चाहिए। आप फरमाते हैं कि "तक्वा वालों के लिए शर्त है कि वह अपना जीवन ग़रीबी और दरिद्रता में व्यतीत करें। यह तक़वा की एक शाखा है, जिसके माध्यम से हमें अवैध क्रोध का मुकाबला करना है।" (अकारण ग़ुस्सा जो है उसका मुकाबला करना है। ग़ुस्सा अगर सही अवसर और स्थान के हिसाब से हो तो जायज है लेकिन अवैध ग़ुस्सा छोटी छोटी बातों पर ग़ुस्सा लड़ाई झगड़े उनसे बचो।) फरमाया कि "बड़े बड़े आरिफ और सिद्दीकों के लिए अंतिम और कड़ी मंज़िल क्रोध से बचना ही है।" (सबसे बड़ा मुश्किल काम जो है क्रोध से बचना, ग़ुस्सा से बचना, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करना।) फरमाया "अजब" और "पनदार" क्रोध से पैदा होते हैं" (अर्थात अहंकार और अभिमान जो हैं वे क्रोध से पैदा होते हैं) "और ऐसा ही कभी ख़ुद ग़ज़ब अहंकार और अभिमान का परिणाम होता है।" (और ग़ुस्सा भी इसलिए आता है कि इंसान में अहंकार होता है। गर्व है। अपने आप को कुछ समझता है। विनम्रता नहीं है। दरिद्रता नहीं है इसलिए ग़ुस्सा की स्थिति पैदा होती है और यह ग़ुस्सा ही है जिसने आजकल दुनिया में हर जगह घरों से लेकर बड़े स्तर तक हर जगह उपद्रव पैदा किया हुआ है।) फरमाया कि "क्योंकि प्रकोप उस समय होगा जब आदमी अपने नफस को दूसरे पर प्राथमिकता देता है।" फरमाया कि "मैं नहीं चाहता कि मेरी जमाअत वाले आपस में एक दूसरे को छोटा या बड़ा समझें या एक दूसरे पर अभिमान या हीन दृष्टि से देखें। ख़ुदा जानता है कि बड़ा कौन है या छोटा कौन है। यह एक प्रकार का तिरस्कार है, जिसके अंदर घृणा है, डर है कि यह तिरस्कार बीज की तरह बढ़े और उसकी मौत का कारण हो जाए।" (अगर किसी को तुच्छ समझते हो छोटा समझते हो कम समझते हो किसी प्रकार का मज़ाक करते हो किसी को कम नज़र से देखते हो तो ये चीज़ें तिरस्कार की श्रेणी में आती हैं और तिरस्कार का बीज जब दिल में स्थापित हो जाए तो वह बढ़ता है और परिणाम क्या निकलता है कि मनुष्य को मार देता है। फरमाया उससे बचो।) फरमाया कि "कुछ आदमी बड़े आदमियों से मिलकर बड़े सम्मान से व्यवहार करते हैं, लेकिन बड़ा वह है जो दरिद्र की बात को दरिद्रता से सुने उसकी दिलजोई करे इस बात का सम्मान

करे। कोई चिढ़ की बात मुँह पर न लाए कि जो दुख पहुंचे। ख़ुदा तआला फरमाता है وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (सूरह अल्हुजरात 12)

फरमाया कि "तुम एक दूसरे का चिढ़ का नाम न लो यह काम दुराचारी तथा अनाचारी का है।" (अर्थात् इस तरह चिढ़ का नाम लेना यह कार्य किसका है कौन लोग यह काम करते हैं, जो धर्म से दूर हटे हुए हैं जो सही राह से हटे हुए हैं। दुराचारी कौन है सही रास्ते से हटाने वाला। झूठा, पापी, अनैतिक कार्य करना वाला, आज्ञाकारिता से बाहर निकला हुआ। ऐसे लोग जो हैं यह दुराचारी कहलाते हैं।) फरमाया "यह कार्य दुराचार और अनाचार वाला है जो किसी को चिढ़ाता है वह न मरेगा जब तक वह ख़ुद उसी तरह पीड़ित न हो। अपने भाइयों को तुच्छ न समझो जब एक ही चश्मे से सारे पानी पीते हो तो कौन जानता है किस की किस्मत में अधिक पानी पीना है। आदरणीय और सम्माननीय कोई सांसारिक नियमों से नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला के निकट बड़ा वह है जो मुत्तकी है।

اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ

(सूरह अल्हुजरात 14)(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 36 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर इस बात को कहते हुए कि मुत्तकी कौन है आप फरमाते हैं कि

"ख़ुदा की वाणी से पाया जाता है कि मुत्तकी वे होते हैं जो नम्रता और दरिद्रता से चलते हैं। वे अंहकार पूर्ण बातचीत नहीं करते उनकी बातचीत ऐसी होती है जैसे छोटा बड़े से बातचीत करे।" (मुत्तकी कौन है।? वे जो प्रत्येक से इस तरह बात करते हैं जिस तरह छोटा आदमी, बच्चा बड़े से बात करता है या ग़रीब अमीर से बात करता है इस तरह बात कर रहे हैं। बावजूद अमीर होने के बावजूद बड़ा होने के उन में यह गुण पाया जाता है कि वह बेहद विनम्रता से बात करते हैं।) फरमाया कि "हमें प्रत्येक अवस्था में वह करना चाहिए जिस से हमारी सफलता हो। अल्लाह तआला किसी का ठेकेदार नहीं। वह विशेष तक्वा को चाहता है। जो तक्वा करेगा वह उच्च स्थान को पहुंचेगा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में से किसी ने विरासत में तो सम्मान नहीं पाया।" आप फरमाते हैं कि "यद्यपि हमारा विश्वास है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सम्माननीय पिता अब्दुल्ला मुशरिक नहीं थे लेकिन उस ने नबुव्वत तो नहीं दी। यह तो अल्लाह की कृपा थी उन सदकों के कारण जो उनकी प्रकृति में थे। यही कृपा के कारण थे। हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जो "अबुल अंबिया" (नबियों के पिता) थे उन्होंने अपने सच्चाई और तक्वा से ही बेटे को कुरबान करने में संकोच नहीं किया। ख़ुद आग में डाले गए। हमारे सय्यद व मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि की ईमानदारी और निष्ठा देखिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रत्येक प्रकार की बुरी तहरीक का मुकाबला किया। तरह तरह के दु:ख और पीड़ा उठाई लेकिन परवाह न की यही ईमानदारी व निष्ठा थी जिस के कारण अल्लाह तआला ने फज़ल किया।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 37 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो यह उच्च आदर्श है जो हमारे लिए भी है।

फिर आप फरमाते हैं कि कैसे सच्ची बुद्धि और सच्चा ज्ञान प्राप्त किया।? फरमाया कि "सच्ची बुद्धि और सच्ची (अक्ल या) ज्ञान अल्लाह तआला की तरफ लौटे बिना प्राप्त ही नहीं हो सकती। इसलिए तो कहा गया है कि मोमिन की बुद्धि से डरो, क्योंकि वह अल्लाह के नूर से देखता है सच्ची बुद्धि और वास्तविक ज्ञान..... कभी नसीब नहीं हो सकता जब तक तक्वा उपलब्ध न हो।" फरमाया "यदि तुम सफल होना चाहते हो तो बुद्धि से काम लो चिंता करो सोचो चिन्तन और चिंता के लिए कुरआन में बार बार उपदेश हैं।" (अब एक तरफ अगर कोई व्यक्ति अपने ज्ञान और बुद्धि को गलत रंग में उपयोग करता है तो उसकी मौत का कारण बन जाता है दूसरी तरफ अल्लाह तआला फरमाता है कि बुद्धि से भी काम लो, ज्ञान से भी काम लो और सोचो और चिन्तन भी करो और आप इसी बारे में ताकीद फरमा रहे हैं कि कुरआन ने बार बार उपदेश फरमाए हैं इसमें मौजूद हैं।) फरमाया कि "किताब मकनून और कुरआन पर विचार करो।" (पवित्र कुरआन अल्लाह तआला की किताब है, इसकी छुपी हुई बातों को जानने की कोशिश करो। अनुवाद पढ़ो, व्याख्या पढ़ो। रमज़ान के दिनों में कुरआन की तिलावत की जाती है साथ साथ दर्स भी हैं उसकी ओर ध्यान दो) "और नेक प्रकृति हो जाओ। जब तुम्हारे दिल शुद्ध हो जाएंगे और इधर सद बुद्धि से काम लोगे और तक्वा की राहों पर कदम मारोगे तो इन दोनों के जोड़ से वह स्थिति पैदा हो जाएगी कि رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (सूरह आले इम्रान 192) फरमाया "तुम्हारे दिल से यह निकलेगा। उस समय समझ में आ जाएगा कि यह सृष्टि व्यर्थ नहीं बल्कि वास्तविक निर्माता की सत्यता और इस बात पर आधारित है ताकि तरह तरह की शिक्षा और कला जो धर्म को सहायता देते हैं प्रकट हों।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 36 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

एक तरफ ज्ञान और बुद्धि आजकल के आधुनिक लोगों को अल्लाह तआला से दूर ले जा रही है दूसरी ओर अल्लाह तआला फरमाता है बुद्धि और ज्ञान से काम लोगे तो अल्लाह तआला के अस्तित्व का पता लगेगा अल्लाह तआला की प्रशंसा का पता लगेगा। आजकल लोग कहते हैं कि ख़ुदा नहीं। ख़ुदा इसलिए नज़र नहीं आता कि उनके धर्म की आंख अंधी है अपनी बुद्धि और ज्ञान केवल सांसारिक गुणवत्ता पर रखते हैं केवल दुनिया की ओर ध्यान है और धर्म से इसलिए हट गए हैं कि उनके धर्म प्राचीन और पुराने हो चुके हैं। उनके लिए अल्लाह तआला का मार्गदर्शन नहीं रहा इसलिए इस बारे में सोच नहीं सकते बुद्धि भी नहीं कर सकते। हमारे धर्म में तो हमारे लिए कुरआन किताब है और वह हमेशा के लिए ज्ञान और अनुभूति से परिपूर्ण किताब है। कुरआन पर विचार और चिन्तन से फिर तक्वा में बढ़ाता है। अल्लाह तआला की सृष्टि की ओर ध्यान दिलाता है। और जब आदमी तक्वा में बढ़ता है फिर ख़ुदा तआला को देखता है अर्थात तक्वा ख़ुदा तआला को दिखाता है। अल्लाह तआला का अस्तित्व फिर विचार करने वाले को, तक्वा में विकास करने वाले को पहाड़ों की ऊंचाई में भी नज़र आता है और गहरी घाटियों में भी नज़र आता है। नदियों में भी अल्लाह तआला का अस्तित्व नज़र आता है और समुद्र में भी नज़र आता है। चाँद और सितारों में भी नज़र आता है। ब्रह्मांड के विभिन्न ग्रहों में नज़र आता है। एक वास्तविक मोमिन सिर्फ सूखी बुद्धि और तर्क पर नहीं चलता बल्कि अल्लाह तआला से संबंध पैदा कर के अल्लाह तआला से नूर प्राप्त करता है। इसलिए रोज़ों में नूर की भी हमें खोज करनी चाहिए कि रमज़ान का उद्देश्य भौतिक चीज़ों में कमी करके बाहरी आहार को कम करके आध्यात्मिक बातों की तलाश है और उसमें भी हमें बढ़ने की कोशिश करनी चाहिए और इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हर इंसान आत्म शुद्धि की कोशिश करे। अपने नफ्स को शुद्ध करने की कोशिश करे और अपनी शक्तियों और ताकतों को शुद्ध करने की कोशिश करे। अगर अपनी शक्तियों और ताकतों का सही उपयोग करना है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि इन को पवित्र करो इन को शुद्ध करो। और यही वह तक्वा है जो अल्लाह तआला हम से चाहता है।

फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि अगर जमाअत में शामिल हुए हो इस्लाम की सेवा करना चाहते हो तो पहले ख़ुद तक्वा और पवित्रता धारण करो। इस्लाम की सेवा सिर्फ बातों से नहीं होगी बल्कि हमें तक्वा और पवित्रता धारण करनी पड़ेगी। यह जो विषय चल रहा है उसकी ओर ध्यान दिलाते हुए आप फरमाते हैं "अब मैं अपने पहले लक्ष्य का उल्लेख करता हूँ अर्थात "साबरू वा राबेतू"।(आले इम्रान 201) जिस तरह दुश्मन के मुकाबला पर सीमा पर घोड़ा होना ज़रूरी है ताकि दुश्मन सीमा से न निकलने पाए। इसी तरह तुम भी तैयार रहो।" (साबरू वा राबेतू" की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं दुश्मन से बचाव के लिए सीमाओं पर घोड़े खड़े किए जाते हैं, सेना खड़ी की जाती है ताकि दुश्मन हमारी सीमाओं में प्रवेश न करे। फरमाया वैसे ही तुम भी सैनिकों की तरह तैयार रहो।) "ऐसा न हो कि दुश्मन सीमा से निकल कर इस्लाम को सदमा पहुँचाए।" फरमाया कि "मैं पहले भी बयान कर चुका हूँ कि अगर तुम इस्लाम का समर्थन और सेवा करना चाहते हो तो पहले ख़ुद तक्वा और पवित्रता धारण करो जिस से ख़ुद तुम ख़ुदा तआला के दृढ़ शरण के किला में आ सको।" (अल्लाह तआला की शरण मजबूत किले में आ सको।) "और फिर तुम इस सेवा और सौभाग्य और विशेषाधिकार प्राप्त हो।" (जब अल्लाह तआला की शरण में आ जाओगे तो इस सेवा का जो इस्लाम की सुरक्षा की सेवा है इसका तुम्हें मौका भी मिलेगा और तुम्हारा अधिकार भी स्थापित हो जाएगा क्योंकि तुम ने अपना सुधार किया है। तक्वा पर स्थापित हुए।) फरमाया "तुम देखते हो कि मुसलमानों की बाहरी शक्ति कैसी कमज़ोर हो गई है। क़ौमें उन्हें नफरत और घृणा की दृष्टि से देखती हैं अगर तुम्हारी आंतरिक और हार्दिक शक्ति भी कमज़ोर और कम हो गई तो बस फिर तो ख़ात्मा ही समझो। तुम अपने नफसों को ऐसे पवित्र करो कि अल्लाह तआला की शक्ति उनमें सम्मिलित हो जाए और वह सीमा के घोड़ों की तरह मज़बूत और निगरान हो जाएं। अल्लाह तआला की कृपा हमेशा मुत्तकियों और सच्चों के साथ शामिल हुआ करती है। अपने आचरण और आदतें ऐसे न बनाओ जिनसे इस्लाम को दाग़ लग जाए बुरे कार्य करने वालों और इस्लाम की शिक्षा का पालन न करने वाले मुसलमानों से इस्लाम को दाग़ लगता

है। कोई मुसलमान शराब पी लेता है तो कहीं उल्टी करता फिरता है। पगड़ी गले में होती है। छेदों और गंदी नालियों में गिरता रहता है पुलिस के जूते पड़ते हैं हिंदू और ईसाई इस पर हंसते हैं। उसका ऐसा शरीअत के ख़िलाफ काम उसका ही उपहास का कारण नहीं होता बल्कि वास्तव में इसका असर स्वयं इस्लाम तक पहुंचता है।" (इस्लाम बदनाम हो रहा है।)

अब आजकल अब चाहे एक सीमित समूह ही है कुछ आतंकवादी हैं या गलत काम करने वाले हैं यह कोई नहीं कहता कि वह कुछ आदमी हैं या कुछ समूह हैं इस्लाम को बदनाम किया जाता है। इस्लाम पर आरोप लगाया जाता है कि इस्लाम की ऐसी शिक्षा है। तो इस्लाम की ओर संबंधित होने वाले किसी की भी कोई हरकत बहरहाल विरोधियों को दुश्मनों को इस्लाम पर उंगली उठाने का मौका देगी। फरमाया कि "मुझे ऐसी ख़बरें या जेलखानों की रिपोर्टें पढ़कर बहुत दु:ख होता है जब मैं देखता हूँ कि इतने मुसलमान बुरे कर्मों के कारण सज़ा के दोषी हुए। दिल व्याकुल हो जाता है कि ये लोग जो सीधा पथ रखते हैं अपने बुरे कर्मों के कारण सिर्फ अपने आप को नुकसान नहीं पहुंचाते बल्कि इस्लाम पर हंसी कराते हैं। फरमाया कि "मेरा उद्देश्य इससे यह है कि मुसलमान लोग मुसलमान कहला कर उन वर्जित और मना किए गए कार्य करते हैं जिस से न केवल उन्हें बल्कि इस्लाम को संदिग्ध कर देते हैं।" फरमाया "अत: अपने चाल चलन और आदतें ऐसी बना लो कि काफिरों को भी तुम पर (जो दरअसल इस्लाम पर होती है) आलोचना करने का अवसर न मिले।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 77.78 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

फिर तक्वा के भागों के बारे में अधिक विवरण फरमाते हैं। "तक्वा के कई घटक हैं।" (अंहकार है अर्थात गर्व आदि। अपने आप को बड़ा समझना है, अपनी प्रशंसा आप करना, माल हराम है। फरमाया तक्वा जो है उसमें) "गर्व, अपने आप को बड़ा समझना, माल हराम से परहेज़ और अनैतिकता से बचना भी तक्वा है।" (जो अच्छे आचरण प्रकट करता है उसके दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है। اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ (सूरह अल्मोमिन: 97)अब विचार करो कि यह हिदायत किया शिक्षा देती है। इस हिदायत में अल्लाह तआला की यह इच्छा है कि अगर विरोधी गाली दे जवाब गाली से न दिया जाए बल्कि उस पर सब्र किया जाए उसका परिणाम यह होगा कि विरोधी तुम्हारी श्रेष्ठता को मानने वाला होकर ख़ुद ही लज्जित और निराश हो जाएगा और यह सज़ा उस सज़ा से बहुत बढ़कर होगी जो बदले के तौर पर तुम उसे दे सकते हो।" फरमाया "इस प्रकार तो एक ज़रा सा आदमी हत्या तक बात पहुंचा सकता है लेकिन मानवता की मांग और तक्वा की इच्छा यह नहीं है। नैतिकता एक ऐसा तत्व है कि हानि पंहुचाने वाले मनुष्य पर भी इसका असर पड़ता है। किसी ने अच्छा कहा है।

लुत्फ कुन लुत्फ कि बेगाना शवद हलका बगोश

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 81 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

कि मेहरबानी से व्यवहार करो कि बेगाने भी तुम्हारे दोस्तों के क्षेत्र में इससे शामिल हो जाते हैं। फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि मनुष्य को नेक कार्य और तक्वा की ओर ध्यान करना चाहिए। आप फरमाते हैं कि "मूल बात जो ध्यान देने योग्य है वह यह है कि इंसान को नेक कार्य और तक्वा की तरफ ध्यान देना चाहिए और नेकी के मार्ग धारण करने चाहिए तब ही कुछ होता है।

اِنَّ اللّٰهَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ

ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि ख़ुद वह अपनी स्थिति को न बदले। जान बूझ कर ग़लत विचार करने और बात को अन्तिम छोर तक पहुंचाना बिल्कुल बेहूदा बात है सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि लोगों को चाहिए कि ख़ुदा तआला की ओर लौटें। नमाज़ें पढ़ें। ज़कात दें। अधिकारों के छीनने और बुराई से रुक जाएं। (दूसरों के हक़ मारने और ग़लत काम करने से गंदे काम करने से अधर्म करने से रुक जाएं।) फरमाया कि "यह बात बहुत अच्छी तरह प्रमाणित है कि कई बार जब केवल एक व्यक्ति ही बुरे कार्य करता है तो सारे घर और सारे शहर की मौत का कारण हो जाता है। इसलिए बुराइयों को छोड़ दो कि वह मौत का कारण हैं।..... यदि तुम्हारा पड़ोसी संदेह करता है तो उसकी बुरी धारणा दूर करने की कोशिश करो और उसे समझाओ। मनुष्य कहाँ तक उपेक्षा करता जाएगा।" फरमाया कि "हदीस में आया है कि मुसीबत के आने से पहले जो दुआ की जाए वह स्वीकार होती है क्योंकि भय और आतंक से पीड़ित होने के समय तो हर व्यक्ति दुआ और अल्लाह तआला की ओर लौट सकता है।" फरमाया कि शालीनता यही है कि शांति के समय दुआ की जाए।" (मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 262.263 प्रकाशन 1985 ई यू. के) तो इस तरफ हमें ध्यान देना चाहिए।

फिर आप बयान फरमाते हैं कि मूल बात यह है कि "तक्वा का रौब दूसरों पर भी पड़ता है और ख़ुदा तआला मुत्तकियों को बर्बाद नहीं करता है।" फरमाया कि "मैंने एक किताब में पढ़ा है कि हज़रत सैयद अब्दुल कादिर साहिब जिलानी रहमतुल्लाह अलैहि जो बड़े बुज़ुर्गों में से हुए हैं। उनका नफस बड़ा पवित्र था। एक बार उन्होंने अपनी मां से कहा कि मेरा दिल दुनिया से उचाट है। मैं चाहता हूँ कि कोई मार्ग दर्शक तलाश करूं जो मुझे शान्ति और संतोष का मार्ग दिखलाए। मां ने जब यह देखा कि अब यह हमारे काम का नहीं रहा तो उनकी बात को मान लिया और कहा कि अच्छा तुझे विदा करती हूँ। यह कहकर अंदर गई और अस्सी मुहरें जो उसने जमा की हुई थीं उठा लाई और कहा कि इन मुहरों से शरीयत के हिस्सा कि अनुसार चालीस मुहरें तेरी हैं और चालीस तेरे बड़े भाई की इसलिए चालीस मुहरें तुझे तेरा हिस्सा देती हूँ यह कहकर चालीस मुहरें उनकी बगल के नीचे लिबास में सी दें।" (शर्ट के अंदर जो कपड़े पहना हुआ था उस के नीचे सी दें) "और कहा कि शांति की जगह पहुंच कर निकाल लेना और आवश्यकता के अनुसार अपने खर्च में लाना। सय्यद अब्दुल कादिर साहिब ने अपनी मां से पूछा कि मुझे कोई नसीहत कह दें।" (यात्रा पर जा रहा हूँ कोई नसीहत कह दें।) "उन्होंने कहा कि बेटा झूठ कभी न बोलना" (यह नसीहत है और हमेशा याद रखना) "इस से बड़ी बरकत होगी। इतना सुनकर आप विदा हुए। संयोग ऐसा हुआ कि जिस जंगल से होकर आप गुज़रे इसमें कुछ रास्ते में लूटने वाले डाकू रहते थे जो यात्रियों को लूट लिया करते थे। दूर से सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब पर भी उनकी नजर पड़ी। क़रीब आए तो उन्होंने कंबल पहने फकीर सा देखा। एक ने हंसी से पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है? आप अभी अपनी मां से ताज़ा नसीहत सुनकर आए थे कि झूठ न बोलना। तुरन्त जवाब दिया कि हां चालीस मुहरें मेरी बग़ल के नीचे हैं। जो मेरी माँ ने थैले की तरह सी दी हैं।" (जेब की तरह अंदर सी दी हैं।) "इस डाकू ने समझा कि यह ठट्ठा करता है। दूसरे डाकू ने जब पूछा तो उसे भी यही जवाब दिया। अत: प्रत्येक चोर को यही जवाब दिया। वह उन्हें अपने सरदार डाकू के पास ले गए कि बार बार यही कहता है।" (कि मेरे पास इतनी मुहरें हैं।) सरदार ने कहा, अच्छा इसका कपड़ा देखो तो सही। जब तलाशी ली गई तो वास्तव में चालीस मुहरें निकलीं। वे हैरान हुए कि यह अजीब आदमी हमने ऐसा आदमी कभी नहीं देखा। अमीर ने आप से पूछा कि क्या कारण है कि तू ने इस तरह से अपने धन का पता बता दिया ? आपने कहा कि मैं ख़ुदा के धर्म की खोज में जाता हूँ। निकलते समय पर माँ साहिबा ने नसीहत फरमाई थी कि झूठ कभी न बोलना। यह पहला परीक्षण था झूठ क्यों बोलता। यह सुनकर" (सरदार जो था डाकुओं का) सरदार रो पड़ा और कहा आह मैंने एक बार भी ख़ुदा तआला की आज्ञा न मानी। चोरों से सम्बोधित होकर कहा कि इस बात और व्यक्ति की दृढ़ता ने तो मेरा तो काम समाप्त कर दिया है। मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रह सकता और तौबा करता हूँ। इसके कहने के साथ ही बाकी चोरों ने भी तौबा कर ली।

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 79-80 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

तो यह बात हमें भी अपनी समीक्षा लेने की ओर ध्यान दिलाती है। हम ने भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इसलिए माना है कि धर्म बिगड़ गया और इस्लाम की सही शिक्षा पर कोई नहीं चल रहा था। अगर इस्लाम की सही शिक्षा पर हम ने चलना है तो मसीह मौऊद को मानो। हम ने इसलिए माना है। इसके बाद फिर क्या हम अपनी बुराईयां छोड़ दी हैं ? झूठ एक ऐसी बुराई है जो ज़ाहिरी तौर पर मामूली लगती है लेकिन बहुत बड़ी है और अगर घटना की गुणवत्ता पर परखें तो प्राय: शायद इस बुराई से पीड़ित हों। इसलिए बैअत और तक्वा की यह अपेक्षा है कि हम इस बुराई से बचें और यहाँ बाहर के देशों में आए हुए जो इन बहुत सारे ऐसे हैं जो आए भी इसलिए हैं कि धर्म के कारण से बाहर निकले हैं। अपने देश में उन्हें धर्म का पालन करने की अनुमति नहीं थी। स्वतंत्रता से अपने धर्म की अभिव्यक्ति की अनुमति नहीं थी। तो हमें इतना अधिक विशेष रूप से पश्चिमी देशों में रहने वाले लोगों को बहुत ध्यान देना चाहिए कि हमारा हल्का सा भी कोई कार्य ऐसा न हो जिस से यह व्यक्त होता हो या हमारी भाषा से कोई ऐसा शब्द नहीं निकले जिस से यह व्यक्त होता है या अपने ग़लत बातों के कारण से कि यह झूठ है या हम ग़लत किस्म के लाभ उठा रहे हैं । इसलिए तक्वा की गुणवत्ता को सामने रखते हुए प्रत्येक को अपनी समीक्षा लेने की ज़रूरत है।

फिर इस ओर ध्यान दिलाते हुए कि ख़ुदा तआला की दी गई शक्तियों को कैसे न्याय से प्रयोग किया जाए और उन्हें इस्तेमाल करने से ही मनुष्य का विकास होता है। आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने जितनी शक्तियां प्रदान की हैं वे नष्ट करने के नहीं दिए उनका उचित और वैध उपयोग करना ही उनकी उन्नति करना है।" (उन्हें न्याय से उपयोग करना और उचित उपयोग करना ही उनका विकास है। उन्हें बढ़ाना है उन्हें लाभ उठाना है। उन्हें सही रखना है तो उन का उचित उपयोग करना चाहिए।) फरमाया कि इसलिए इस्लाम ने पौरूष शक्ति या आंख निकालने की शिक्षा नहीं दी बल्कि उनका उचित उपयोग और आत्म शुद्धि कराई है जैसा कि फरमाया قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ (अल्मोमेनून 2) फरमाया कि मुत्तकी के जीवन का नक्शा खींचकर अंत में परिणाम स्वरूप यह कहा وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (अल्बकरह: 6) अर्थात जो लोग तक्वा पर कदम मारते हैं। ग़ैब पर ईमान लाते हैं। नमाज़ डगमगाती है तो उसे फिर खड़ा करते हैं। ख़ुदा के दिए हुए से देते हैं।" (रातों को इबादतें कर रहे हैं। नमाज़ में विचार आते हैं तो फिर अल्लाह तआला की तरफ ध्यान फेरते हैं। उन विचारों को झटक देते हैं या कभी नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं रहता कि नमाज़ें समय पर पढ़नी हैं फिर अपना सुधार करते हैं। नमाज़ें समय पर अदा करने के लिए ध्यान करते हैं तो ऐसे लोग ही तो कल्याण पाने वाले होते हैं और ख़ुदा के दिए हुए से देते हैं जो माल अल्लाह तआला ने दिया है उस के रास्ते पर उसमें से खर्च करते हैं। फरमाया कि "बावजूद नफस के खतरों के स्वयं बिना सोचे पिछली और वर्तमान अल्लाह की किताब पर ईमान लाते हैं और अन्त में वह विश्वास में पहुँच जाते हैं।" (जब ग़ैब पर ईमान हो होता है तो यकीन हो जाता है ऐसा विश्वास हो जाता है जो कि विश्वास तक पहुँच जाता है।) फरमाया "यही वह लोग हैं जो मार्गदर्शन के सिर पर हैं और एक ऐसी सड़क पर हैं जो बराबर आगे जा रही है और जिस से आदमी कल्याण तक पहुंचता है तो यही लोग समृद्ध सफल हैं जो गंतव्य तक पहुंच जाऐंगे और रास्ते के खतरों से मुक्ति पाएंगे। इसलिए शुरू में ही अल्लाह तआला ने हमें तक्वा की शिक्षा देकर एक ऐसी किताब हमें दी जिसमें तक्वा की वसीयतें भी दीं।" (अर्थात तक्वा के बारे में सारी जो संबंधित नसीहतें थीं वह भी दे दीं) "अत: हमारी जमाअत यह ग़म सारे सांसारिक दुखों से बढ़ कर अपनी जान पर लगाए कि उनमें तक्वा है या नहीं?"

(मल्फूज़ात भाग1 पृष्ठ 35 प्रकाशित 1985 ई यू .के)

फिर अल्लाह तआला के तक्वा के बारे में बताते हैं फरमाते हैं कि

"अल्लाह तआला का डर इसी में है कि मनुष्य देखे कि उसका कथनी और करनी कहाँ तक एक दूसरे से संगत है।" (बातें वह क्या कर रहा है। पालन किया कर रहा है। आपस में तालमेल है? एक दूसरे से मिलते हैं या अलग हैं?) "फिर जब देखे कि उसकी कथनी और करनी बराबर नहीं तो समझ ले कि वह अल्लाह तआला के ग़ज़ब का पात्र होगा। जो दिल अपवित्र है चाहे देखने में कितना ही पवित्र हो वह दिल ख़ुदा की निगाह में मूल्य नहीं पाता।" (अगर दिल गंदा है अपना कर्म तदनुसार नहीं है फिर चाहे जितनी मर्ज़ी हम अच्छी बातें करते रहें अल्लाह तआला की दृष्टि में इस का कोई मूल्य नहीं बल्कि ख़ुदा का क्रोध उत्तेजित होगा।" (अल्लाह तआला सब को इससे बचाए।) फरमाया "इसलिए मेरी जमाअत समझ ले कि वह मेरे पास आए हैं इसलिए कि बीज बोया जाए जिससे वह फलदार पेड़ हो जाए। अत: हर एक अपना विचार करे कि उसका भीतर कैसा है और उसकी भीतरी अवस्था कैसी है। अगर हमारी जमाअत भी ख़ुदा न करे कि ऐसी है कि उसकी ज़बान पर कुछ है और दिल में कुछ है तो अन्त ख़ैरियत से न होगा। अल्लाह तआला जब देखता है कि एक जमाअत जो दिल से ख़ाली है और मौखिक दावे करती है वह समृद्ध है वह परवाह नहीं करता।" फरमाया कि "बदर की जीत की भविष्यवाणी हो चुकी थी" (जंगे बदर में) हर तरह जीत की उम्मीद थी।" (अब वह भविष्यवाणी थी अल्लाह तआला ने कहा था जीत दूंगा।)" लेकिन फिर भी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रो-रोकर दुआ मांगते थे। हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहो अन्हो ने निवेदन किया कि जब हर तरह जीत का वादा है तो दुआ की ज़रूरत किया है? आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि वह हस्ती समृद्ध है अर्थात संभव है कि अल्लाह तआला के वादा में कोई छिपी शर्तें हों।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 11 प्रकाशित 1985 ई यू .के)

इसलिए यह हमारे लिए भी बड़े भय का स्थान है। बेशक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी अल्लाह तआला ने तरक्की के वादे किए हैं सफलता के वादे किए हैं प्रभुत्व के वादे किए हैं लेकिन हमें इसका हिस्सा बनने के लिए अपनी समीक्षा लेने की ज़रूरत है।

फिर आप फरमाते हैं कि "हमारी जमाअत के लिए विशेष रूप से तक्वा की ज़रूरत है। केवल इस विचार से भी कि वह एक ऐसे व्यक्ति से संबंध रखते हैं और इस के बैअत के सिलसिले में हैं जिसका दावा मामूरियत का है ताकि जो लोग चाहे किसी प्रकार के द्वैषों हस्दों या शिर्कों से पीड़ित थे या कैसे ही दुनिया में डूबे हुए थे इन सभी आपदाओं से मुक्ति पाऐं।" (पुरानी बीमारियां थीं लेकिन अब ऐसे व्यक्ति के सम्बन्धित हो गए हैं जिसका मामूरियत का दावा है। अब जब उस की ओर सम्बन्धित हो गए तो इसलिए सम्बन्धित हुए ताकि इन बातों से और मुसीबतों से छुटकारा पाएं।) आप फरमाते हैं "आप जानते हैं कि अगर कोई बीमार हो जाए चाहे उसकी बीमारी छोटी हो या बड़ी अगर इस बीमारी के लिए दवा न की जाए और इलाज के लिए दुख न उठाया जाए बीमार अच्छा नहीं हो सकता। एक काला दाग़ मुंह पर निकल कर एक बड़ी चिंता पैदा कर देता है कि कहीं यह दाग़ बढ़ता बढ़ता सारे मुंह को काला न कर दे। इसी तरह अवहेलना का भी एक" (दाग़ है। गुनाह का भी एक दाग़ है अपनी कमजोरी और गुनाह का एक) "काला दाग़ दिल पर होता है। फरमाया कि "छोटी चीज़ें आसान समझने से बड़ी हो जाती हैं। (अगर छोटी छोटी त्रुटियों हैं, गुनाह हैं। मनुष्य समझता है कि छोटी छोटी बातें हैं परवाह नहीं की। सुस्ती दिखाई। उन्हें ठीक करने के बारे में अल्लाह तआला की आज्ञाओं पर पूरी तरह पालन नहीं किया और उन से बचने के लिए अल्लाह तआला का तक्वा न किया तो किया होगा।? यह सुस्तियाँ फिर बड़े गुनाह बन जाते हैं।) फरमाया "छोटा गुनाह वही छोटा दाग़ है जो बढ़कर अन्त में सारा मुंह काला कर देता है।"

(मल्फूज़ात भाग1 पृष्ठ 10 प्रकाशित 1985 ई यू .के)

यह छोटे गुनाह ही हैं जो बड़े गुनाह बनते हैं और फिर इंसान को काला कर देते हैं।

अल्लाह तआला हमें रमज़ान के इस विशेष परिवेश में अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार तक्वा की तौफीक प्रदान करे और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के वे लोग बनें, जो हर प्रकार की बुराइयों से बचने वाले और ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपने प्रत्येक कर्म को ढालने वाले हों और इस महीने से ऐसे पवित्र होकर निकलें और नेकियों पर ऐसे स्थापित हों कि हमारी छोड़ी हुई बुराइयां फिर कभी दोबारा लौट कर के न आएं। अल्लाह तआला हमें इस की शक्ति दे।

नमाज़ के बाद मैं दो नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। एक नमाज़ जनाज़ा हाज़िर है। आदरणीया ताहिरा हमीद साहिबा पत्नी आदरणीय अब्दुल हमीद साहिब मरहूम कउनटरी यू.के का है। 8 जून को एक लंबी बीमारी के बाद 60 साल की उम्र में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनका संबंध झेलम पाकिस्तान से था। 2001 में यू.के आईं। नेक महिला थीं। नमाज़ों की पाबन्द ख़िलाफत से आस्था का संबंध बच्चों की भी प्रशिक्षण सही रंग में की जमाअत से जोड़े रखा। और विशेष रूप से नमाज़ों का ध्यान रखने वाली थीं। ख़ुदा तआला की कृपा से मूसिया भी थीं। उनके परिवार में उनकी मां के अतिरिक्त एक बेटा और पांच बेटियां हैं। अल्लाह तआला उनसे माफी और दया का व्यवहार करे और परिजनों को भी धैर्य प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब है। जो आदरणीय हमीद अहमद साहिब शहीद पुत्र आदरणीय शरीफ अहमद साहिब ज़िला अटक का है। आदरणीय हमीद अहमद साहिब पुत्र आदरणीय शरीफ अहमद साहिब की उम्र 63 साल थी। अटक में रहते थे। उन्हें अहमदियत के विरोधियों ने 4 जून दोपहर ढाई बजे उनके घर के बाहर फायरिंग कर के शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। जानकारी के अनुसार 4 जून को विरोधियों हमीद साहिब ज़ुहर की नमाज़ अदा करने के बाद मस्जिद से घर वापिस आए और घर के गेट पर आकर बाइक हॉर्न बजाया। उनकी बेटी घर का दरवाज़ा, बाहर का गेट खोलने के लिए आ रही थीं। इस दौरान अज्ञात हमलावर आए और हमीद साहिब पर बेहद क़रीब से फायरिंग कर दी और मौके से फरार हो गए। हमीद साहिब को एक गोली लगी जो चेहरे के दाईं ओर से लगी और सिर के पीछे से बाहर निकल गई। गोली लगने के परिणाम में हमीद साहिब मौके पर ही शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके परिवार में अहमदियत का आरम्भ आप के दादा आदरणीय मियां मुहम्मद अली साहिब ऑफ लोरी वाला ज़िला गुजरांवाला के माध्यम से हुआ था। जिन्होंने 1923 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ियल्लाहो अन्हो के मुबारक हाथ पर बैअत की थी और मरहूम शहीद स्वर्गीय 15 मई 1953 ई को

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN XXX
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
PUNHIND 01885 Vol. 1 Thursday 14july April 2016 Issue No. 19

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : (0091) 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

लोरी वाला ज़िला गुजरांवाला में पैदा हुए थे। फिर एफ.ए तक वहीं शिक्षा उन्होंने प्राप्त की फिर सनजवाल कारखाना अटक में नौकरी की। नौकरी के समय में शहीद ने ग्रेजवोशन पूरा किया और साथ DHMS का पाठ्यक्रम भी किया। होम्योपैथी का अभ्यास भी करते थे। 26 साल सेवा करने के बाद शहीद मरहूम ने सेवानिवृत्ति ले ली और फिर अटक शहर में होम्योपैथिक क्लिनिक खोला। मरहूम की शादी 1982 ई में आदरणीया अमतुल करीम साहिबा पुत्री आदरणीय बशीर अहमद साहिब से हुई थी। जो रबवा के थे। उनकी दुकान रबवा कपड़ा स्टोर के नाम से मशहूर थी। उनकी भी मौत चार साल पहले हो गई थी। बीमार थीं। मरहूमा गवर्नमेंट कॉलेज अटक में लेक्चरर के रूप में काम कर रही थीं। शहीद मरहूम अनगिनत गुणों के मालिक थे। दावत इलल्लाह, मेहमान नवाज़ी, सहानुभूति, ग़रीबों की मदद, पदाधिकारियों की आज्ञाकारिता बड़े स्पष्ट गुण थे। बड़े सक्रिय दाई इलल्लाह थे। अनिवार्य चंदा अदा करना और अन्य सभी वित्तीय तहरीकों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। सनजवाल कारखाने में नौकरी के दौरान अपने एक साथी की बैअत करवाई जिसके बाद उस व्यक्ति का सारा परिवार भी जमाअत में शामिल हो गिया। इसी तरह एक परिवार के नौ लोगों ने बैअत की जिस पर फैक्टरी में उनका विरोध भी शुरू हो गिया। शहीद स्वर्गीय सरकार द्वारा आवंटित क्वार्टर में रहते थे। विरोधियों ने उनके घर पर पथराव भी किया। अंतत: कारखाना प्रशासन ने हमीद साहिब और उनके नए अहमदी साथी का सनजवाल फैक्टरी से वाह फैक्टरी ज़िला रावल पिंडी तबादला कर दिया। शहीद स्वर्गीय को कुछ समय से विरोध का सामना था। जनवरी 2015 ई में एक उग्रवादी ने मस्जिद अटक और क्लिनिक को आग लगाने की कोशिश की थी। बहरहाल चौकीदार के समय पर आ जाने पर वह व्यक्ति भाग गया। इस घटना के दो दिन बाद इस उग्रपन्थी ने दोबारा उनके क्लीनिक को आग लगाने की कोशिश की और मौके पर पकड़ा गया। बाद में पुलिस के हवाले कर दिया गया। उनके बेटे नवीद अहमद साहिब यहाँ हैं वह पिता के नमाज़ जनाज़ा पर जा नहीं सके। कहते हैं कि मेरे पिता ख़िलाफत का पालन करने वाले इंसान थे। बड़े साहसी इंसान थे। दावत इलल्लाह करने वाले थे। पांचों समय की नमाज़ों को ख़ुद भी पढ़ते थे और हमें भी हिदायत करते थे। कुरआन की तिलावत दैनिक करते उसकी हिदायत करते और यहां भी कई बार जलसा में आ चुके थे और हमेशा यह कोशिश होती थी कि मस्जिद फज़ल में आ कर अपनी नमाज़ें जमाअत के साथ अदा करें। उनकी छोटी बेटी सलमा नुज़हत कहती हैं कि पिता जी धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने वाले थे और हर तहरीक पर लब्बैक कहते थे। शहादत से लगभग सप्ताह पहले यही कहते थे कि बेटी जीवन का कोई भरोसा नहीं है और फिर साथ ही नेकियों की हिदायत भी किया करते थे और उनकी एक बेटी फसाहत हमीद साहिबा हैं वह कहती हैं किएक ख़ूबी यह थी जुम्अ: का ख़ुत्बा जो यहां से लाइव सुना जाता था उसकी रिकॉर्डिंग कर ऑडियो रिकॉर्डिंग करके वाट्स अप एप्लिकेशन पर फिर दोस्तों को भेजा करते थे।

उनके दूसरे बेटे सईद अहमद साहिब हैं उनका भी यही कहना है। वही गुण सभी ने लिखे हैं। बेहद नेक और नेकियों की हिदायत करने वाले साहसी और दावत इल्लाह करने वाले थे। पाकिस्तान के हालात में दावत इलल्लाह करना बड़ा मुश्किल काम है। ज़हूर अहमद साहिब हमारे प्राइवेट सैक्रेटरी के दफ्तर में हैं, मुरब्बी हैं उनके यह बहनोई थे और यह भी यही लिखते हैं कि जमाअत की ज़िम्मेदारियों को बड़ी मेहनत और ईमानदारी से निभाते थे। अधिकतम समय निकाल कर जमाअत की सेवा की कोशिश करते थे। हर तहरीक में भाग लेने वाले बच्चों को भी ख़िलाफत और जमाअत के साथ दृढ़ संबंध रखने की हिदायत करने वाले, तहज्जुद पढ़ने वाले, नेक लम्बी दुआएँ करने वाले थे। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे और आप के बच्चों का भी हाफिज़ और नासिर हो। वहाँ बहरहाल उन के बच्चों को खतरा भी है। अल्लाह तआला उन्हें अपनी सुरक्षा में रखे और अपने पिता की नेकियों को जारी रखने की ताकत प्रदान फरमाए।

☆ ☆ ☆

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में दर्जा दोयम (द्वित्तीय) के लिए एलान

सदर अंजुमन अहमदिया कादियान में लिपिक के रूप में सेवा करने वाले इच्छुक दोस्तों के लिए लिखा जाता है कि

1. इच्छुक की आयु 25 साल से कम होनी चाहिए। और इच्छुक की शिक्षा कम से कम10+2 सैकण्ड डिवीज़न 45% प्रतिशत नम्बर प्राप्त किए हों। इस से अधिक शिक्षा प्राप्त होने पर भी कम से कम सैकण्ड डिवीज़न या इस से अधिक नम्बर हों।

2. इच्छुक का अच्छी लिखाई वाला होना आवश्यक है और उर्दू Inpage कम्पोज़िन्ग जानता हो और रफतार कम से कम 25 शब्द प्रति मिन्ट हों।

3. केवल वे उम्मीदवार सेवा के योग्य होंगे जो सदर अंजुमन अहमदिया की तरफ से लिपिकों के लिए लिए जाने वाली परीक्षा और इन्ट्रवियू में पास होंगे।

4. जो दोस्त सदर अंजुमन अहमदिया में लिपिक के रूप में सेवा करने के इच्छुक हों और ऊपर वर्णित शर्तों को पूरा करते हों वे अपने निवेदन दे सकते हैं।

फार्म नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान से मंगवा लें अपना फार्म भर कर नज़ारत दीवान में भिजवा दें। फार्म मिलने पर परीक्षा का आयोजन किया जाएगा। इस ऐलान के दो महीना के अन्दर अन्दर जो फार्म दफतर में जमा होंगे उन्हीं पर विचार किया जाएगा।

5. परीक्षा कमीशन कारकुन दर्जा दोयम का सिलेबस निम्नलिखित है। प्रत्येक में पास करना अनिवार्य है।

☆ पवित्र कुरआन सादा पढ़ना पहला पारा।
☆ चालीस जवाहर पारे, (पुस्तक) अरकाने इस्लाम और नमाज़ अनुवाद सहित।
☆ कश्ती नूह बरकाते दुआ धार्मिक ज्ञान।
☆ अहमदियत की आस्थाओं पर निबन्ध।
☆ नज़्म दुर्रे समीन(शाने इस्लाम)
☆ अंग्रेज़ी 10+2 की योग्यता अनुसार।
☆ हिसाब 10+2 की योग्यता अनुसार।

6. लिखित परीक्षा में पास करने वालों का इन्ट्रवियू होगा। सेवा के लिए इन्ट्रवियू में पास करना अनिवार्य है।

7. लिखित तथा इन्ट्रवियू में पास होने पर इच्छुक का नूर अस्पताल कादियान में मेडिकल चेक अप होगा वही इच्छुक सेवा के योग्य होंगे जो नूर अस्पताल के मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत वाले और तन्दुरुस्त होंगे।

8. यदि किसी उम्मीद वार को जमाअत की किसी पोस्ट पर चुना जाता है तो इस रूप में उस को कादियान में अपने रहने की व्यवस्था स्वंय करनी होगी।

9. कादियान आने जाने के सफर ख़र्च इच्छुक के अपने होंगे।

नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

मोबाइल: 09815433760, 09464066686, दफतर01872-501130

ई मेल: nazaratdiwanqdn@ qdn

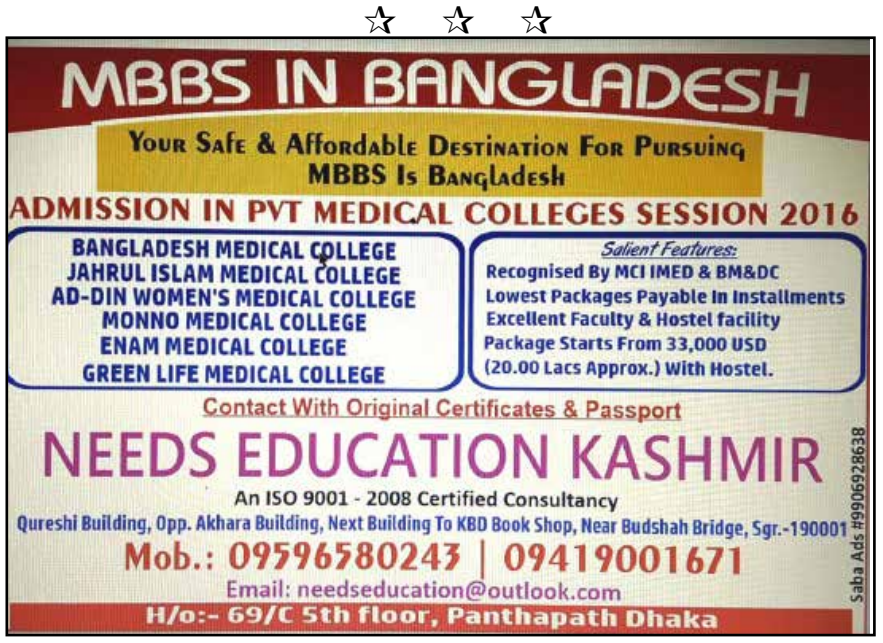

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad